प्रथम रिपोर्ट

हम ने अपने परियोजना से संबन्धित अपने प्रथम चरण के अनुसंधान में निम्न बिन्दु पर कार्य किया, जो इस प्रकार है -

- गोंड जनजाति का संक्षिप्त विवरण
- गोंड जनजाति से संबन्धित क्षेत्र परिचय / चिन्हितकरण
- गोंड नाच का संक्षिप्त विवरण
- नाच के कतिपय कलाकारों का विवरण
- नाच के वाद्य यंत्र का विवरण
- नाच के समग्रियों का विवरण
- वर्तमान स्थिति

गोंड जनजाति का संक्षिप्त विवरण - गोंड जनजाति मूल रूप से मध्य प्रदेश से पलायन करके बिहार आए । चूँकि रोमन लिपि मे गोंड को “GOND” लिखा जाता है जिसके कारण कालांतर में इसे गोंड के नाम से पुकारा जाने लगा जो आज तक जारी है। मध्य प्रदेश से पलायन उपरांत ये जनजाति बिहार और दूसरे राज्यो में रोजगार के लिए अपना बसेरा नदियो के किनारे समतल भूभाग पर बसाया।

पलायन को ले के इनके बीच कई तरह की कहानियाँ प्रचलित है जैसे - एक समय में जब मध्यप्रदेश में गोंडवाना नाम का स्टेट हुआ करता था।

जिस के राजा दलपत शाह थे जो गोंड जाति से संबन्धित थे। उसी दौरान राजा दलपत शाह का किसी दूसरे राजा से युद्ध हुआ और ये लोग भागते हुए गंगा के किनारे किनारे बिहार और दूसरे राज्यों में आ बसे । दलपत शाह की महारानी का नाम दुर्गवती था जो चंदेल वंश की राजकुमारी थीं और दलपत शाह की वीरता से प्रभावित हो कर उनसे प्रेम विवाह किया था और जिंहोने उस युद्ध में लड़ाई के दौरान लड़ते हुए जान गंवाई दी , जिसे बाद में गोंड जाति के लोग गोंड वीरांगना महारानी दुर्गवती के नाम से संबोधित करते हैं।

इस जनजाति के लोग अनार्य पद्धति को मानते हैं और इनके इष्ट देव शंकर हैं । ये अपने आपको शिव का गण मानते हैं भक्त नहीं । अपने पूर्वजों के बारे में इनका मानना है की शिव के गण नंदी ,भूत ,बैताल हमारे पूर्वज हैं। भगवान शंकर इनके आराध्य देवता हैं और ये लोग भगवान शिव का सम्बोधन “बड़ा देव” से करते हैं ।

भगवान शंकर के साथ-साथ इस समुदाय के लोग आदि शक्ति भवानी और काली कि पूजा भी करते हैं। बिहार में इनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है और समाज में इन्हें नीच दृष्टि से देखा जाता है क्यूंकि वर्तमान में भी इस जनजाति की बड़ी विडम्बना इनकी सामाजिक और जातीय पहचान की है।

गोंड जनजाति से संबन्धित क्षेत्र परिचय / चिन्हितकरण- अपने प्रथम चरण के अनुसंधान में मैंने देखा की गोंड जनजाति के लोग बिहार में गंगा और सोन नदी के किनारे समतल मैदान में रहते हैं। मूलरूप से ये जनजाति बिहार के पुराना शाहबाद ज़िला और वर्तमान में बक्सर ,भोजपुर,कैमूर ,रोहतास के साथ-साथ ये छिटपुट रूप मे बिहार के उत्तरी भाग बेतिया,मुंगेर आदि जगहों पर भी मौजूद हैं। इन इलाकों में ही ये जनजाति और गोंड नाच की एक समृद्ध परंपरा रही है । इनकी आर्थिक स्थिति दयनिये है इसलिए गोंड जाति के ज़्यादातर लोग/कलाकार जीवकोपार्जन के लिए मजदूरी करते हैं और इनका मूल पेशा दूसरे के खेतों में मजदूरी करना और छोटे-मोटे बांस के घरेलू उपयोग की चीज़े बना कर घूम घूम के बेचना हैं।

गोंड नाच का संक्षिप्त विवरण- गोंड नाच गोंड जनजाति के लोगों द्वारा की जाने वाली एक एक लोक नाट्य/नाच शैली है जिसकी परिकल्पना गोंड जनजाति के लोगों द्वारा की गयी है और जिसका पोषण-प्रदर्शन गोंड जाति के लोगों के द्वारा ही किया जाता है इसीलिए इसे "गोंड नाच" के नाम से जाना जाता है। शुरुआत में गोंड जनजाति के लोग खुद के मनोरंजन के लिए गोंड नाच का प्रदर्शन अपने समुदाय के बीच शादी-व्याह एवं अन्य उत्सवों पर करते थे। चूंकि गोंड नाच शैली का अपना कोई लिखित इतिहास नहीं है जिससे ये पता चल सके कि इसकी उतपति कब, कैसे और किस संदर्भ में हुई। इसकी कोई ठोस जानकारी नहीं मिलती और न ही मेरी इस प्रथम यात्रा के दौरान इस जनजाति के लोगों से बातचीत के आधार पर अभी तक ऐसी कोई बात निकाल कर आई जिससे इसकी व्याख्या हो सके। गोंड नाच का प्रदर्शन किसी बने बनाए मंच पर नहीं किया जाता है, इसका प्रदर्शन सिर्फ खुले मैदान में समतल जगह पर किया जाता है। नाच की इस स्वतंत्र और उन्मुक्त शैली में नाच के साथ -साथ गीतों और छोटे-छोटे नाट्य का भी इस्तेमाल किया जाता है ।

इस लोक नाच शैली में जहां एक तरफ विरोध का स्वर दिखाई पड़ता है वहीं दूसरी ओर प्रदर्शन का माध्यम व्यंग आधारित है। अपने इस नाच के माध्यम से इस जनजाति के लोग समाज पर सीधे प्रहार करते हैं जो इनके गीतों में भी साफ झलकता है।

गोंड नाच कि कथावस्तु मुख्य रूप से धार्मिक रीति रिवाजों ,अंध विश्वास ,सामाजिक उंच नीच और प्रदेश जाने की पीड़ा जैसे विषय पर केन्द्रित होती है। चूँकि इस जनजाति के लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हैं जिसकी वजह से ये जीविकोपार्जन के रूप में भी इस नाच का प्रदर्शन दलित समुदाय में होने वाले शादी व्याह के अवसर पर करते रहते हैं। परंतु आज वर्तमान में गोंड नाच से जुड़े कलाकारो की संख्या बिलकुल नगण्य रह गई है।

नाच के कतिपय कलाकारों का विवरण-

क्रम संख्या	नाम	उम्र	पेशा	परंपरागत विधा
1	राम नाथ गोंड	57	खेतिहर मजदूर	हुरूक बजाना
2	छोटक गोंड	40	मजदूर	नर्तक
3	ललन गोंड	52	मजदूर	गायक
4	दहारी गोंड	42	मजदूर	गायक/ मजिरा वादक
5	पारस गोंड	38	मजदूर	नर्तक
6	तूफानी गोंड	35	मजदूर	नर्तक
7	दशयी गोंड	85	खेतिहर मजदूर	जोड़ी/मजिरा वादक
8	भोरी गोंड	55	मजदूर	मजिरा वादक
9	राजनारायन गोंड	57	मजदूर	मजिरा वादक
10	व्यास गोंड	55	खेतिहर मजदूर	हुड़क वादक
11	श्रीनारायण गोंड	45	खेतिहर मजदूर	झरनाठ/हलबोई/जोकरई
12	रजिन्दर गोंड	50	मजदूर	हलबोई
13	सत्यनारायन गोंड	45	मजदूर	नर्तक
14	सुकन गोंड	38	मजदूर	नर्तक
15	विश्राम गोंड	65	खेतिहर मजदूर	झरनाठ
16	लालबाबू गोंड	36	मजदूर	हरबोल
17	साधू गोंड	55	खेतिहर मजदूर	गायक
18	भिखारी गोंड	70	मजदूर	गायक
19	बचन गोंड	42	मजदूर	नर्तक
20	गंगादयाल गोंड	65	खेतिहर मजदूर	हुरक/ मंजीरा

नाच के वाद्य यंत्र का विवरण- बिहार की स्वतंत्र और उन्मुक्त लोक नाच शैली “गोंड नाच” का मुख्य वाद्य यंत्र हुड़ुक है। जिसे इस जनजाति के लोग भगवान शंकर का रूप मानते है और इस समुदाय के लोगों द्वारा इस वाद्य यंत्र की पुजा की जाती है। हुड़ुक की महत्ता इस बात से भी जानी जा सकती है जैसा की मुझे अपने अनुसंधान में इस समुदाय के लोगों से पता चला की इस समुदाय में इनके शादी-ब्याह में हिन्दू रीति-रिवाज़ से बिल्कुल अलग शादी में मानर पूजने की रीति में ढोलक की जगह हुड़ुक की पूजा की जाती है।जो गोंड जनजाति को छोड़ किसी भी दूसरे जाति-समुदाय मे नहीं है। इस समुदाय में हुड़ुक से संबन्धित कई लोक तथ्य भी मौजूद है जो हुड़ुक की इस समुदाय और गोंड नाच से जुड़ने की ऐतिहासिकता का आभास देती हैं। जैसे- कुछ लोगों का मानना है कि इनके समुदाय में हुड़ुक कि पूजा की शुरुआत वंशोउत्पति के लिए शुरू हुयी और पूजा के पश्चात भगवान शंकर के आशीर्वाद से इनके घर में बच्चे का जन्म हुआ। और तबसे गोंड जनजाति के लोगों दवारा हुड़ुक पूजा कि परम्परा चली आ रही है।

हुड़ुक के अलावा इस नाच में सहायक वाद्य यंत्र मजिरा होता है जो झाल कि तरह ही लेकिन झाल से बड़ा होता है।

नाच के समग्रियों का विवरण- गोंड नाच में सामग्री (props) के रूप में बाँस से बना एक झाड़ू नुमा डंडे होता है जिसे "**झरनाठ**" कहा जाता है। और इसका इस्तेमाल पूरे नाच के प्रदर्शन के दोरान कई रूपों में अलग-अलग तरीके से किया जाता है। झरनाठ का इस्तेमाल सामग्री के साथ-साथ बीच-बीच में संगीत उत्पन्न करने के लिए भी किया जाता है। इस तरह गोंड नाच कि सामग्री इस नाच में संगीत का भी साधन है, जिसे इस समुदाय के लोग शिव लिंग के रूप में देखते हैं।

वर्तमान स्थिति- वर्तमान में बिहार कि ये लोक नाच/नाट्य शैली लगभग मृतप्राय अवस्था में है। अपने अनुसंधान के दोरान हमने देखा कि इस जनजाति कि नई युवा पीढ़ी अपने समुदाय कि इस पारंपरिक नाच शैली से या तो अनभिज्ञ है या जुड़ना नहीं चाहती। और ना ही पुरानी पीढ़ी अपनी नई पीढ़ी को इससे जुड़ने, जानने और सीखने को प्रेरित करती है। इसकी इस अवस्था के कई कारण सामने दिखयी पड़ते हैं। जैसे- इस जनजाति कि आर्थिक स्थिति, सामाजिक पहचान, इस जनजाति के प्रति समाज और सरकार का दृष्टिकोड़, सामाजिक वातावरण व संरचना, जातिये पहचान, युवाओं का रोज़गार के तलाश में शहरों कि तरफ पलायन आदि।
जिसकी वजह से पुरानी और नई पीढ़ी के बीच उनकी सांस्कृतिक परम्परा के आदान प्रदान कि बेहतर और स्वस्थ स्थिति नहीं रह गई या तो बन नहीं पा रही है और इस नाच शैली का प्रवाह अवरुद्ध हो गया है। वर्तमान में इस नाच से जुड़े और इस लोक परंपरा को जानने,करने वाले कलाकारों कि जमात लगभग सभी इलाके में ना के बराबर ही बच गई है।

अग्रिम कार्य योजना

- गोंड नाच से संम्बंधित क्षेत्र परिचय एवं नाच दलों का चिन्हिकरण

- गोंड नाच के कलाकारों से गोंड नाच/शैली से संबन्धित बातचीत
- गोंड नाच में गाये जाने वाले गीतों और नाट्य प्रसंगों का डॉक्युमेंटेशन
-
- गोंड नाच की प्रदर्शन शैली और उसके प्रदर्शन के तरीके का विवरण
- प्रदर्शन
- प्रदर्शन का स्टील एवं विडियो डॉक्युमेंटेशन
  आडिओरिकॉर्डिंग
- इस जनजाति और नाच से संबन्धित विदद्वानों से भेंटवार्ता व बातचीत
- लोक नाट्ययों का आध्यान करने वाले नाट्यकर्मियों और अध्यताओं से भेंटवार्ता
- विडियो एडिटिंग
- औडिओ एडिटिंग
- मिक्सिंग एंड फ़ाइनल डॉक्युमेंट्री
- कमेंटरी एंड वॉइस ओवर
- पूरे परिघटना का दस्तावेज़ लेखन